Vol 5 Issue 9 March 2016 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

Golden Research Thoughts

International Recognition Multidisciplinary Research Journal

ISSN: 2231-5063 Impact Factor : 3.4052(UIF) Volume - 5 | Issue - 9 | March - 2016

वर्तमान पारिवारिक संबंधों में संत साहित्य की उपादेयता का अध्ययन

सत्येन्द्र प्रकाश
(विषय हिन्दी)
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा(म प्र)

प्रस्तावना

वर्तमान भारतीय ही नहीं बल्कि विदेषी परिवारों में विघटन तथा बच्चों में गिरते नैतिक मूल्य एक विकट और विकराल समस्या सुरसा के मुख के समान बढ़ती जा रही है। लोग चाहकर भी इससे बाहर निकलनें में अपने आपको असमर्थ पाते हैं। आज परिवार के सभी सम्बन्ध बिगड़ चुके हैं। स्वार्थ में उलझे लोग अपने से हटकर देखने में नितान्त असमर्थ दिखाई देते हैं। 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना तो दूर रही सहोदर भी पराये हो गये हैं। ऐसी स्थिति में संगठित एवं आदर्श परिवार की बात अब कोरी कल्पना प्रतीत होती है। परिवार के अन्तर्गत सभी सदस्य भावनात्मक सूत्र में गहरे बंधे होते हैं। परिवार का सबसे श्रेष्ठ एवं योग्य व्यक्ति उसका मुखिया होता है। परिवार के सभी सदस्यों के प्रति उसका समान व्यवहार अपेक्षित है। एक स्वस्थ, सुखी एवं आदर्श परिवार की यही परिभाषा है, किन्तु आज के प्रगतिशील एवं जागरूक समाज में जहाँ हर तरह की सुविधा–स्वतंत्रता है, पारिवारिक सम्बन्ध तनावपूर्ण एवं कटु हो रहे हैं और इसी कटुता के तहत संयुक्त परिवार के बन्धन दिन–प्रतिदिन ढीले पड़ते जा रहे हैं। संयुक्त परिवार आज आदर्श के पर्याय नहीं रहे। परिवार में पैसे का महत्व बढ़ता जा रहा है। परिवार का वह सदस्य जिसके पास पैसे का अभाव है, अपने ही लोगों के बीच उपेक्षणीय है।

समाज में व्याप्त हिंसा और अव्यवस्था आज के टूटते हुए परिवारों की देन है। क्योंकि बच्चे की प्राथमिक पाठशाला उसका परिवार ही होता है। परिवार में जो कुछ घटता है उसका प्रभाव समाज पर पड़े बिना नहीं रहता। यदि परिवार में प्रेम, सेवाभाव, समर्पण, अनुशासन, आज्ञाकारिता, पर दुःख कातरता जैसे उदात्त भाव हैं तो निश्चित ही उसका प्रभाव परिवार में पलने वाले बच्चे पर पड़ेगा। खेद के साथ कहना

पड़ता है कि आज का परिवार इन सभी उदात्त मूल्यों के ढेर पर बैठा है। सारे पारिवारिक रिश्ते अब विघटित हो गये हैं। सम्बन्धों में अब स्वार्थ हावी हो गया है। अर्थ सबसे ऊपर स्थापित होकर सारे मूल्यों एवं सम्बन्धों पर शासन कर रहा है। एक आदर्श परिवार में स्त्री–पुरुष, पुत्र–पुत्री, भाई–बहन, मां–बाप, चाचा–चाची आदि सभी एक दूसरे से गहरे भावनात्मक सूत्र में बंधे रहते हैं और बूढ़ों का आदर किया जाता है। परन्तु आज समाज में व्यक्तिवाद इतना हावी हो गया है कि संयुक्त परिवार टूट कर नाभिकीय परिवार के रूप में सामने आ गया है जिसमें पति–पत्नी में आये दिन छोटी–छोटी बातों में तलाक तक हो जाता है। सहिष्णुता, सहने की क्षमता अब अन्तिम सांसें ले रही हैं। परिवार में उसी को महत्व मिलता है जो ज्यादा पैसे लाता है, जबकि गुणों की महत्ता को सीमित किया गया है। आज सभी प्रकार के सम्बन्धों में प्रेम की कमी है।

पिता पुत्र के सम्बन्धों में खटास का कारण है प्रेम की जगह धन का दबाव। वर्तमान जीवन में पिता–पुत्र के सम्बन्धों में भी इस पैसे ने दरार डाल दी है। इन सम्बन्धों की वह मधुरता आज के युग में काफी कुछ खण्डित हो गई है। पुत्र, पिता को तभी तक पिता मानता है, जब तक वह उस पर आश्रित एवं अविवाहित रहता है। पिता भी अपने पुत्र को केवल एक अच्छा इन्सान ही बनाने की बात नहीं सोचता, बल्कि उसे एक कमाऊ पुत्र की आवश्यकता है जो निरन्तर उसकी झोली में नोटों की बरसात करता रहे। ऐसी ही सन्तानें पिता की दृष्टि में योग्य पुत्र है। दूसरी ओर ऐसे योग्य पुत्रों की कमी नहीं जो अपने वृद्ध पिता को उनके जीवनकाल में दाने दाने के लिए तरसाते हैं और समय–असमय उन्हें अपमानित करने से भी बाज नहीं आते। हाँ, मरणोपरान्त उनकी अन्त्येष्टि क्रिया में भरपूर पैसा खर्च कर झूठी एवं ढोंगी सामाजिक प्रतिष्ठा का स्वांग अवश्य रचते हैं और समाज में झूठी सामाजिक इज्जत पाने का नाटक करते हैं।कबीर कहते हैं –

जारि बारि करि आवे देहा, मूवा पीछै प्रीति सनेहा।
जीवन पित्र कूँ अन्न न ख्यावै, मूवां पीछै प्यंड भरावैं।।

सन्त कवि सुन्दरदास कहते हैं कि तुम चाहे जितना भी भण्डार भर लो तुम्हारी धन की तृष्णा कभी शान्त होने वाली नहीं है। यथा –

''सुझत नाहिन कालहि तो सिर, मारि के थाम मिलाइहिं माटी।''

सभी को धन जोड़ने की ही नहीं, घर भरने की लालसा एवं तात्कृते होड़ लगी हुई है। लोभ–लालच में आकर ही सारे बुरे काम स्त्री–पुरुष कर रहे हैं। लोभी व्यक्ति सारे मूल्यों का विनाशक होता है क्योंकि लोभ महापाप की खान है। चरणदास की वाणी देखी जा सकती है –

लोभ नीच बर्नन करूं महापाप की खानि।
मंत्री जाका झूठ है, बहुत अधर्मी जानि।।

पिता पुत्र के रिष्तों के समान ही पति–पत्नी का रिश्ता भी आज काफी कमजोर हुआ है। स्त्री–पुरुष के सम्बन्धों में बराबरी की अंधी होड़, विलासिता के जीवन, भौतिकवादिता ने आज काफी तनाव पैदा किया है । पति–पत्नी का रिश्ता भी आज डगमगा गया है। अब वे एक दूसरे को शक की निगाह से देखने लगे हैं। पति–पत्नी में आत्मीय सम्बन्धों की पवित्र निष्ठा एवं सद्भावना दिनोंदिन लुप्त होती जा रही है। पति–पत्नी के सम्बन्धों की वह पवित्र निष्ठा दिनों–दिन लुप्त होती जा रही है। उनमें आत्मीय सम्बन्धों की पवित्रता एवं सद्भावना का अभाव नजर आता है। इसी के चलते तलाक की घटनाएँ आम बात हो गई है।आये दिन कलह, मारपीट और अलगाव की घटनायें बढ़ी हैं जिनका प्रभाव संतानों पर पड़ रहा है। उनमें भावनाओं, सम्वेदनाओं का अकाल सा पड़ गया है। ठीक से संतानों की परवरिश न होने से सर्वत्र अव्यवस्था एवं हिंसा की गतिविधियों में वृद्धि हुई है। उनकी मानसिकता कलुषित हुई है, इस कलुषित मानसिकता के कारण ही समाज में अराजकता एवं अमानुषता का वातावरण बढ़ा है।

सम्प्रति स्त्री–पुरुष को शान से बराबरी का दर्जा दिया गया है। यह सही है कि नारी को संपूर्ण स्वतंत्रता दी जानी चाहिए। नारी मुक्ति और नारी–स्वातंत्रय की दृष्टि से तो यह ठीक है मगर इस समानता और स्वतंत्रता को स्वच्छन्दता के रूप में नहीं लेना चाहिए। क्योंकि स्वच्छन्दता का यह रूप जब सारी मर्यादाओं और वर्जनाओं को तोड़कर उच्छृंखलता की हदें छूने लगता है, तब सारा पारिवारिक ढांचा ही चरमरा उठता है। अतः दोनों को मर्यादित जीवन ही बिताना चाहिए।

कबीर कहते हैं कि –

नारी पीवै पुरुष को, पुरुष नारि को खाय।
दादू गुरु के ज्ञान बिन दोन्यूं गये बिलाय।।
कबीर जाकी सुंदरी जाँणि करै विभचार।
ताहि न कबहूँ आदरै प्रेम पुरिष भरतार।।

आज स्त्रियों से ज्यादा 'कामिनियाँ' समाज में दिखायी पड़ रही हैं। शील का तो नाम ही नहीं है। आयातित अपभ्रष्ट सांस्कृतिक मूल्य हमारी सुन्दर एवं वैज्ञानिक मान्यताओं को भी निगले जा रहे हैं। काम–वासना और लोभ–लालच, स्त्री–पुरुष, पण्डे–पुजारी, मुल्ला–मौलवी, नेता–अधिकारी सभी पर शासन करने लगे हैं। सन्तों का कामुक स्त्रियों के लिए पातिव्रत्य का संदेश आज अत्यन्त प्रासंगिक बन पड़ा है और उसकी उपयोगिता पारिवारिक विघटन को रोकने के लिए आज और भी अधिक बढ़ गयी है। कनक और कामिनी के सम्बन्ध में कबीर की वाणी आज भी मानवों को सचेत करती है –

कबीर एक कनक अरु कांमनी, विषफल कीये उपाय।
देखै ही थैं विष चढ़ै, खाये सूं मरि जाई।।
कबीर एक कनक अरु कांमनी, दोऊ अगनि की झाल।
देखे तन प्रजलै, परस्यां ह्वै पैमाल।।

सन्तों पर नारी विरोधी होने का आरोप लगता है जो उचित नहीं है। वस्तुतः संतो ने उन्हीं की नारियों की निन्दा की है जो तथाकथित कामिनियाँ रही हैं। कामिनियों से संतों का तात्पर्य चरित्र भ्रष्ट कुलटा स्त्रियों से ही है। वर्तमान प्रगतिशील नारी समर्थक भी ऐसी आधुनिकताओं की स्वेच्छाचारिता को नापसंद करते हैं क्योंकि समाज के स्वास्थ्य के लिए उन्हें स्वीकार नहीं किया जा सकता है।

सच तो यह है कि चरित्रवान नारियों के लिए संतों के मन में बड़ा सम्मान था। पतिव्रता को सन्तों ने बेहद सम्मान दिया है। वास्तव में सामाजिक मूल्यों के उच्चादर्शों को बनाये रखने के लिए पातिव्रत–धर्म की महत्ता आज भी प्रासंगिक है। कबीर तो कुरूप पतिव्रता के ऊपर करोड़ों तथाकथित स्वरूपाओं (सुन्दर और वासनाओं का व्यापार करने वाली तथाकथित विश्वसुन्दरियों) को न्यौछावर कर देते हैं –

पतिवरता मैली भली, काली कुचिल कुरूप।
पतिवरता के रूप पर बारौं कोटि स्वरूप।।

वास्तव में दाम्पत्य को जोड़ने वाला सीमेन्ट सेवा है जिससे सम्बन्धों में स्थायित्व आता है। सन्त दादू दयाल भी कहते हैं–

दादू नीच ऊँच कुल सुन्दरी सेवा सारी होइ।
सोई सुहागनि कीजिए, रूप न पीजें धोइ।।

पतिव्रत का पालन करनें वाली स्त्रियों के प्रति इनके मन में सम्मान के लिए पूरी जगह थी।

पति ही सू प्रेम होय पति ही सू नेम होय।
पति ही सू छेम होय पति ही सू रत है।।

शरीर की भूख मिटाने वाले व्यक्तियों के बारे में सन्त कवयित्री सहजोबाई ने जो कहा था, वह आज भी प्रासंगिक है।

कामी अति भिष्टल सदा, चलै चाल विपरीत।
सील नहीं सहजो कहै, नैनन मांहि अनीत।।

आज इन मूल्यों की अत्यन्त आवश्यकता है पारिवारिक–सामाजिक तनाव एवं हिंसा की समाप्ति के लिए सन्तों की शिक्षाएँ परिवार में फिर से सेवा, कर्तव्य भावना, पर–दुःख कातरता, मिल बाँट कर भोग करने की प्रवृत्ति पैदा कर आत्म निर्वासन की जिन्दगी जी रहे वृद्धों की स्थिति में सहायता कर सकती है। सन्तों ने धन की जगह 'प्रेम' को अपार विस्तार और असीम महत्व दिया। संत केवल परिवार का सामान्य निर्वाह हो जाय, इतने ही धन की स्वामी से प्रार्थना करते हैं। अतः सन्तों की वाणियाँ इस संदर्भ में काफी प्रासंगिक है और जिनका उपयोग पारिवारिक हित में हो सकता है। संत कोई ऐसी बात नहीं कहते जिसे उन्होंने अपने अनुभव से प्रमाणित न पाया हो। वे कहते है कि

साई इतना दीजिये जामें कुटुम्ब समाय।
मैं भी भूखा न रहू साधु न भूखा जाय।।

गणपति चन्द्र गुप्त के अनुसार – संतो ने विभिन्न धर्मो का सामान्यीकरण या विज्ञानीकरण करते हुए उसे एक ऐसे विश्व–धर्म के रूप में प्रतिष्ठित किया, जिसे सब अपना कह सकें। अतः धर्म का विज्ञानीकरण एवं वैश्वीकरण संतों के चिन्तन की सबसे बड़ी मौलिक उपलब्धि है। संत मत के सम्बन्ध में ओम प्रकाश त्रिपाठी का यह कथन ठीक है कि आज की हिन्दी कविता किसी भी स्तर पर उन संत–कवियों को काटकर नहीं चल सकती जिन्होंने "जो सिर काटै अपना, चलै हमारे साथ", कहकर लोक मंगल का नेतृत्व किया था। कागज की लेखी के बजाय' आंखिन की देखी' पर विश्वास कर उसे प्रचारित किया। संतों ने स्वयं अपने जीवन में त्याग और कर्म को धारण किया। संतों ने सामाजिक व्यवहार के संतुलन एवं सामंजस्य पर बल दिया। उनका मानना है कि संतोष वह साधन है, जिससे मनुष्य एक आदर्श स्थापित कर सकता है । संतों ने 'विश्व बन्धुत्व' की भावना का विकास किया। दया, क्षमा, अक्षरता की भावना का प्रचार कर मानव हृदय को परिवर्तित करने की बात कहकर समदृष्टि का प्रचार किया, क्योंकि 'सांई के सब जीव हैं।' धन की भूख आज इतना बढ़ गयी है कि हर आदमी धनी बनने की मानसिकता के चलते अच्छे बुरे सभी कार्यकर रहा है। हर क्षेत्र में भ्रष्टाचार फैला हुआ है। सन्तों की सब इच्छा कितनी प्रासंगिक है कि उन्हें उतना मिलजाय कि वे अपने कटुम्ब का भरण पोषण कर सकें –

''उदर समाता अन्न लै तनहि समाता चीर,
अधिकहिं संग्रह ना करे ताका नाम फकीर।

इस प्रकार सन्त कवियों ने जो कुछ कहा, वह ऐतिहासिक प्रासंगिक एवं युक्ति युक्त उपदेश है। आज व्यक्तिवाद हावी हो गया है। संयुक्त परिवार टूट कर लघु परिवार के रूप में सामने आ गया है। सन्तों की वाणियां इस सन्दर्भ में काफी प्रासंगिक हैं।

निष्कर्ष

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि सन्तों ने अपने समय के कल्याण के लिये जो कुछ कहा, आज के पतन की ओर प्रवृत्त समाज के लिये भी उपयोगी हो सकता है। उनकी वाणियों की जितनी उपादेयता और प्रासंगिकता तब थी, उससे कहीं ज्यादा वर्तमान समय में है। यदि प्रत्येक व्यक्ति सन्त मत द्वारा निर्दिष्ट सत्य का आचरण करे तो हमारी अनेक समस्याओं का समाधान संभव हो सकता है। जनमानस के सन्ताप को दूर करने वाली सन्तों की अमृत मयी वाणी का मध्यकालीन समाज पर व्यापक प्रभाव पड़ा। सन्त मत की प्रासंगिकता तब भी थी, आज भी है और मानवता के कल्याण के लिये भविष्य में भी बनी रहेगी। आज की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक दृष्टि उन सन्त कवियों को काट कर नहीं चल सकती जिन्होंने – ''जो सिर काटै आपना, चलै हमारे साथ'' कह कर लोक मंगल का नेतृत्व किया था। इस प्रकार जब तक ये समस्त विषमताए समाप्त नहीं हो जाती, तब तक विष्व में सन्त मत की प्रासंगिकता बनी रहेगी।

सारांश

वास्तव में सन्त कवि केवल अपने युग की चिन्ता के कवि नहीं हैं, वे भारत के अतीत की तेजस्वी ज्ञानधारा और भविष्य की संभावनाओं के कवि हैं। अधिकांश सन्त गृहस्थ थे और परिवार का भरण पोषण स्वयं मेहनत करके करते थे, 'मांगि के खइबो वालों में से नहीं थे। वे केवल अपने परिवार तक ही सीमित नहीं थे। अपितु दूसरों के बारे में भी चिन्तित रहते थे कि कोई भूखा न रहे। लोभ लालच से दूर थे और जो भी अपनी मेहनत की कमाई है, उसी में संतुष्ट रहने वाले लोग थे। परिवार में पैसे की यह प्रधानता सन्तों को मान्य नहीं।इस अल्पता के बावजूद भी संतो ने अपनी नैतिक जिम्मेवारियों का निर्वहन भी पूर्ण रूप से किया। इसके कारण ही संतों द्वारा सामाजिक पारिवारिक समानता क एक वातावरण तैयार किया था। आज भी इसी नैतिक समझ को पुन विकसित करना होगा तथा आने वाली संतानों को इसके बारे में जागरूक करना होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.कबीर और आज का समय, आलोचना, त्रैमासिक, सहस्त्राब्दी, अंक एकअप्रैल–जून 2000, नई दिल्ली।
2.उत्तर भारत की संत परम्परा – आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, प्रकाशक भारती भण्डार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद।
3.कबीर ग्रंथावली – सम्पादक डॉ. श्याम सुन्दरदास, नागरी प्रचारिणी सभा काशी द्वारा प्रकाशित।
4.कबीर वाणी सुधा – सम्पादक डॉ. पारसनाथ तिवारी, प्रकाशन वर्ष 1972, हिन्दी परिसर, प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयाग।
5.चरणदास की वाणी, भाग 1 एवं 2, प्रेस प्रयाग, दयाबोध, दायी वार्ड, जेल प्रेस, जयपुर वेलविडियर प्रिंटिंग वर्क्स, इलाहाबाद,
6.दादू दयाल की वाणी, प्रेस प्रयाग, दयाबोध, दायी वार्ड, जेल प्रेस, जयपुर बेलबेरियल प्रिंटिंग वर्क्स, इलाहाबाद।
7.पल्टू साहब की वाणी, भाग 1,2,3 वे. प्रेस, प्रयाग, 1961.
8.मलूक दास की वाणी – वे. प्रेस, प्रयाग, 1961.
9.संत साहित्य – श्री भुवनेश्वर नाथ, माधव ग्रंथ माला कार्यालय, बांकीपुर, 1941.
10.हिन्दी संत काव्य में योगतत्व– डॉ. रवि कुमार, अमन प्रकाशन, कानपुर,

सत्येन्द्र प्रकाश
(विषय हिन्दी) अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा(म प्र)

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org